ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 109-112**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

भारत में लैंगिक असमानता और जनसंख्या वृद्धि : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

1. मंसा सिंह
2. डॉ0 सुभी धुसिया

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-31.04.2024, Revised-06.05.2024, Accepted-11.05.2024 E-mail: drcsrathore.agv@gmail.com

सारांश : *भारत में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रगति के बावजूद भी पितृसत्तात्मक मानसिकता जटिल रूप से व्याप्त है। जिस कारण समाज में लैंगिक असमानता पायी जाती है, जो जनसंख्या वृद्धि का एक कारण है, क्योंकि केवल भारत ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर महिलाओं को बुनियादी अधिकारी एवं स्वतंत्रता से वंचित ही किया जाता रहा है– जैसे शिक्षा का अधिकार, घर से बाहर काम करने का अधिकारी, शारीरिक सवायत्ता का अधिकार एवं शादी विवाह जैसे मामलों में निर्णय लेने का अधिकार आदि से वंचित किया जाता रहा है। इन सब कारणों से स्त्रियों की जागरूकता अवरोधित होती है जिससे जनसंख्या वृद्धि होती है। लगभग दुनियाभर में महिलायें गर्भावस्था को लेकर स्वतंत्र नहीं है। महिलाओं को लैंगिक असमानता के कारण शिक्षा एवं नौकरी से वंचित किया जाता है, जिस कारण उनकी प्रजनन दर में वृद्धि होती है जो जनसंख्या वृद्धि का कारण बनती है। यही बढ़ती जनसंख्या असंतुलन पैदा करती है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत लंगानुपात–933, 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत लिंगानुपात–943 है जिसका अर्थ है 1000 प्रति– पुरूष पर 933 स्त्री एवं 1000प्रति– पुरूष पर 943 स्त्री है, और जिस राज्य का साक्षरता दर अधिक है, वहाँ स्त्रियो का लिंगानुपात सही है। जिस राज्य का साक्षरता दर अधिक है, वहां जनसंख्या घनत्व व जनसंख्या वृद्धि दर नियंत्रित है।*

कुंजीभूत शब्द– लैंगिक असमता, जनसंख्या, सांस्कृतिक, सामाजीकरण, स्वतंत्रता, निर्णय क्षमता, पितृसत्तात्मक, शारीरिक सवायत्ता।

भारत एक ऐसा देश रहा है, जहाँ पितृसत्तात्मकता सदैव व्याप्तत रहा है। समाज की बागडोर सदैव पुरूषों के हाथ में रहा है। घर या परिवार में कोई भी फैसले करने हो तो पुरूष मुख्य भूमिका में होता है। परम्परागत रूप से स्त्रियों को कमजोर वर्ग के रूप में ही देखा गया है। आदि काल से देखा जाये तो भारत में कुछ ही महिलाएं ऐसी थीं, जो शिक्षा व अन्य क्षेत्र में अग्रणी रही है। भारत में प्रायः स्त्रियों को घरेलू कार्य के अनुकूल ही देखा गया है और इन कार्यो में मुख्य कार्य भोजन बनाना और बच्चों का पालन पोषण करने तक ही सीमित है, घर में निर्णय लेने की भूमिका पुरूष ही निभाते हैं। इनमें महिलाओं की भूमिका नगण्य होती है। भारत जैसे देश में लैंगिक असमानता का मूल कारण पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें पुरूष औरत पर अपना प्रभुत्व जमाता है। उसका दमन और शोषण करता है। भारत में स्त्रियों का शोषण सदियों पुरानी सांस्कृतिक घटना है। भारत में पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने अपनी जड़ जमा रखी है। इसकी वैधता की स्वीकृति धार्मिक विश्वासों में चाहे वह हिन्दू समाज हो या मुस्लिम समाज।

लिंग भेद– ''अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए महिलाएं अवसरों से कितनी वंचित है और अवसरों के वितरण में पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों के साथ कितना भेदभाव किया जाता रहा है, उसे ही लिंग भेद कहा जाता है।''

लिंग सामाजिक सांस्कृतिक शब्द है परन्तु भारत में सामाजिक रूप से पुरूषों एवं महिलाओं के कार्यो को परिभाषित किया गया है। शारीरिक विच्छेद जन्म से प्राप्त होते हैं, जो सभी प्राणियों में पाया जाता है परन्तु ये विभेद किसी विशेष वर्ग को क्षमताशील नहीं बनाता। परिवार एवं समाज मे ंपुरूषों एवं स्त्रियों के बीच शारीरिक एवं जैविक अंतर सार्वभौमिक है, परन्तु हमारे समाज में इन्हीं अंतरों का लाभ उठाकर नारी का शोषण किया जाता रहा है जिसके प्रभाव से स्त्रियों के मन में असमानता की भावना भर गयी और पुरूष को समाज में सदैव शक्ति का केन्द्र माना जाता रहा है। पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना एवं संस्था मूल रूप से सांस्कृतिक नियमों द्वारा सुदृढ़ होती है, जो स्त्रियों में हीन भावना भरती है, जिससे स्त्रियां अपने जीवन को ऊँचा उठाने में तत्पर नहीं है।

प्राचीन धर्म ग्रन्थ मनुस्मृति में लिखा गया है– ''स्त्री को बाल्यवस्था में पिता के अधीन एवं शादी के बाद पति के अधीन एवं वृद्धावस्था में या विधवा होने पर पुत्र के अधीन रहना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में स्त्री को स्वतंत्र नही रहना चाहिए।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री सिल्विया वाल्वे ने कहा– पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना की ऐसी प्रक्रिया और व्यवस्था है, जिसमें आदमी औरत पर अपना प्रभुत्व जमाता है, उसका दमन करता है और उ सका शोषण करता है, पुत्रों को समाज में वरीयता दी जाती है। बेटे की चाह, अनचाहा गर्भ, कम उम्र में विवाह (बाल विवाह) ये सभी कारण जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं।

स्त्रियों की स्वयं के प्रति जागरूकता की कमी के कारण जनसंख्या में वृद्धि हो रही 1990 में प्रकाशित 'ह्यूमन डेवलपमेन्ट रिपोर्ट (Human Development Report) में स्पष्ट लिखा है समाज के सार्वजनिक क्षेत्रों में पुरूषों ने ऊँचा स्थान बना रखा है वे अपने बल द्वारा महिलाओं को उनका अधिकार नहीं देना चाहते। लैंगिक असमानता के कारण स्त्रियों को स्वतंत्र रूप से शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाई आती है। महिलायें कम जागरूक होती है। स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति ध्यान नहीं देती, संतान के जन्म को लेकर भी सारे निर्णय पुरूष या घर के बुजुर्ग लेते हैं, जिससे अनचाहा गर्भ आदि कारण जनसंख्या वृद्धि करते हैं।

हमारे भारतीय समाज में कुछ कहावते हैं, जो जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहित करती है। जैसे– ग्रामीण समाज में कहावत है– ''एक आँख को आँख और एक पुत्र को पुत्र नही समझना चाहिए।'' अतः कम से कम दो पुत्रों का होना आवश्यक है। भारतीय समाज में पुत्र को वरीयता प्रदान की गयी है, साथ ही पुत्री को पराया धन माना जाता है। समाज में विचारधारा व्याप्त है कि पुत्र ही पिण्डदान करता है। जिससे इन्सान को मरने के बाद मुक्ति मिलती है, जिस कारण से पुत्र प्राप्ति की इच्छा अधिक संतानोत्पत्ति का कारण

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

बनती है।

NHFS-5 की रिपोर्ट में दिया है 66.4 प्रतिशत महिलाएं एनीमिया से ग्रसित है, हर 4 में से एक महिला अत्यधिक वजन से ग्रसित है। स्त्री एवं पुरूषों के बीच स्वास्थ्य सुविधाओं का अन्तर स्पष्ट है, पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों को जन्म के समय से ही उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। आज के समय में भले ही स्त्री–पुरूष समानता का डंका पीटा जाये, परन्तु एक कन्या जन्म लेती है, हेडूब जाता है। इसके अतिरिक्त समाज के लोग सान्त्वना के नाम पर लक्ष्मी आयी कोई बात नही कर के उकसाते हैं और परिवार वालों के मन में उस कन्य और स्त्री (माता) के प्रति कड़वे भाव भरते हैं। आज कल तो पुत्री को गर्भ में ही मार दिया जाता है, जिस कारण जनसंख्या में लिंगानुपात में स्त्रियों की संख्या कम है।

Sex Ratio (Number of Female per 1000 Males)

Sex Ratio (number of females per 1000 males) by residence : 2001-2011

State/ UT Code	India/ State/ Union Territory*	Sex Ratio 2001			Sex Ratio 2011		
		Total	Rural	Urban	Total	Rural	Urban
1	2	3	4	5	6	7	8
	INDIA	**933**	**946**	**900**	**943**	**949**	**929**
01	Jammu & Kashmir	892	918	819	889	908	840
02	Himachal Pradesh	968	989	795	972	986	853
03	Punjab	876	890	849	895	907	875
04	Chandigarh #	777	621	796	818	690	822
05	Uttarakhand	962	1,007	845	963	1,000	884
06	Haryana	861	866	847	879	882	873
07	NCT of Delhi #	821	810	822	868	852	868
08	Rajasthan	921	930	890	928	933	914
09	Uttar Pradesh	898	904	876	912	918	894
10	Bihar	919	926	868	918	921	895
11	Sikkim	875	881	830	890	882	913
12	Arunachal Pradesh	893	914	819	938	953	890
13	Nagaland	900	916	829	931	940	909
14	Manipur	978	967	1,009	992	976	1,026
15	Mizoram	935	923	948	976	952	998
16	Tripura	948	946	959	960	955	973
17	Meghalaya	972	969	982	989	986	1,001
18	Assam	935	944	872	958	960	946
19	West Bengal	934	950	893	950	953	944
20	Jharkhand	941	962	870	949	961	910
21	Odisha	972	987	895	979	989	932
22	Chhattisgarh	989	1,004	932	991	1,001	956
23	Madhya Pradesh	919	927	898	931	936	918
24	Gujarat	920	945	880	919	949	880
25	Daman & Diu #	710	586	984	618	864	551
26	D & N Haveli #	812	852	692	774	863	682
27	Maharashtra	922	960	873	929	952	903
28	Andhra Pradesh	978	983	965	993	996	987
29	Karnataka	965	977	942	973	979	963
30	Goa	961	988	934	973	1,003	956
31	Lakshadweep #	948	959	935	947	952	945
32	Kerala	1,059	1,059	1,058	1,084	1,078	1,091
33	Tamil Nadu	987	992	982	996	993	1,000
34	Puducherry #	1,001	990	1,007	1,037	1,028	1,042
35	A & N Islands #	846	861	815	876	877	874

http://byjus.com

शोध का उद्देश्य–

1. पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था/संरचना का लैंगिक समानता पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना।
2. लैंगिक असमानता एवं जनसंख्या वृद्धि में सम्बन्ध का विश्लेषण करना।
3. पुत्र के प्रति धार्मिक मान्यताएँ जनसंख्या वृद्धि में एवं जनसंख्या वृद्धि में सम्बन्ध का विश्लेषण करना।
4. स्त्रियों के साथ लैंगिक आधार पर घरेलू हिंसा का अध्ययन करना।

शोध पद्धति– प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र गोरखपुर जनपद के सहजनवां ब्लाक से सम्बन्धित है।

शोधार्थिनी द्वारा इस शोध का पत्र में प्राथमिक एवं द्वितियक दोनों प्रकार के आकड़ों का संकलन किया गया है परन्तु तथ्यों को प्रस्तुत करने हेतु प्राथमिक आकड़ों का संकलन किया गया है। चूंकि उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्र के हैं इसलिए शोधार्थिनी द्वारा साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है एवं अपने रिसर्च पेपर से सम्बन्धित निष्कर्ष निकाला गया है।

तथ्यों का प्रस्तुतीकरण–

1. उत्तरदाताओं की पारिवारिक संरचना का विवरण–

सारणी संख्या–1

क्रम संख्या	परिवारिक संरचना का विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	संयुक्त परिवार	24	60
2.	एकाकी परिवार	16	40
	कुल योग	40	100

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि लैंगिक असमानता के कारण बढ़ती जनसंख्या में उत्तरदाताओं में 60 प्रतिशत महिलाएं संयुक्त परिवार से हैं और 40 प्रतिशत महिलाएं एकाकी परिवार से सम्बन्धित है।

2. लैंगिक आधार पर घरेलू हिंसा की शिकार हुई स्त्रियों का विवरण –

सारणी संख्या–2

क्रम संख्या	घरेलू हिंसा की शिकार स्त्रियों का विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	6	15
2.	नहीं	10	25
3.	कभी कभी	20	50
4.	कभी नहीं	4	10
	कुल योग	40	100

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण के आधार पर पता चलता है कि लैंगिक आधार पर 6 स्त्रियां बार बार घरेलू हिंसा की शिकार हुई हैं। 10 स्त्रियों ने नहीं में उत्तर दिया है। 20 स्त्रियां कभी कभी घरेलू हिंसा की शिकार हुई हैं। 4 उत्तरदाता ऐसे हैं जो कभी भी लैंगिक आधार पर घरेलू हिंसा की शिकार नहीं हुई हैं।

3. लैंगिक असमानता, भेदभाव, पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के कारण बढ़ती जनसंख्या की वृद्धि का विवरण–

सारणी संख्या–3

क्र0सं0	जनसंख्या वृद्धि का कारण	हां	नहीं	कभी कभी	कभी नहीं	आवृत्ति
1.	लैंगिक असमानता	40				40
2.	पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था	32		8		40
3	महिलाओं में निर्णय क्षमता की कमी के कारण	32		8		40
4.	पुत्र का अधिक महत्व के कारण	7	14	19		40

उपरोक्त सारणी के विवरण से ज्ञात होता है कि 40 उत्तरदाता यह मानते हैं कि लैंगिक असमानता के कारण जनसंख्या वृद्धि हो रही है। पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के कारण जनसंख्या वृद्धि में 32 उत्तरदाताओं ने हां में जवाब दिया और 8 ने माना है कि कभी कभी पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण जनसंख्या वृद्धि होती है। 32 उत्तरदाताओं ने महिलाओं में निर्णय क्षमता की कमी को जनसंख्या वृद्धि का कारण माना है, वहीं 8 ने कभी कभी माना है। पुत्र का समाज में अधिक महत्व के कारण जनसंख्या वृद्धि में 7 उत्तरदाताओं ने हां में जवाब दिया है 14 ने नकार दिया है और 19 उत्तरदाताओं का मानना है कि कभी कभी इस कारण जनसंख्या वृद्धि होती है।

4. जागरूकता की कमी, पुत्र के प्रति धार्मिक मान्यताएं, पुत्र मोह, पुत्र को आय का साधन, पुत्री को पराया धन मानना आदि जनसंख्या वृद्धि का कारण है का विवरण–

सारणी संख्या–4

क्र0सं0	जनसंख्या वृद्धि का कारण	हां	नहीं	कभी कभी	कभी नही	आवृत्ति
1.	पुत्र के प्रति धार्मिक मान्यताएं	28		8	4	40
2.	पुत्र मोह	30		10		40
3.	जागरूकता की कमी	32		8		40
4.	पुत्र को आय का साधन मानना	21		12	7	40

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से पता चलता है जागरूकता की कमी के कारण जनसंख्या वृद्धि में 32 लोगों ने हां में जवाब दिया है 8 लोगों ने माना है कि कभी कभी जागरूकता की कमी के कारण जनसंख्या वृद्धि होती है। 28 लोगों ने पुत्र के प्रति धार्मिक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

मान्यताओं को जनसंख्या वृद्धि का कारण माना है, वहीं 8 लोगों ने कभी कभी माना है। 4 लोगों ने धार्मिक मान्यताओं को जनसंख्या वृद्धि का कारण नहीं माना है। पुत्र मोह को 40 में से 40 लोगों ने जनसंख्या वृद्धि का कारण माना है। इसमें 21 लोगों ने माना है। इसमें 21 लोगों ने माना है कि पुत्र को आय का साधन होता है तथा 12 लोगों ने कहा कभी कभी, 7 लोगों ने कभी नहीं माना।

5. पेट में पल रहे बच्चे का लिंग परीक्षण हुआ और गर्भ में लड़की होने पर गर्भपात कराया गया–

सारणी संख्या–5

क्र0सं0	लैंगिक हिंसा	हां	नहीं	कभी कभी	कभी नहीं	आवृत्ति
1.	लिंग परीक्षण कराया गया	9	15		16	40
2.	गर्भ में पुत्री होने पर गर्भपात कराया गया	1	4			5

उपरोक्त सारणी के विवरण से पता चलता है कि 40 में से 9 स्त्रियों के गर्भ में पल रहे शिशु का लिंग परीक्षण कराया गया और इनमें से 1 लोगों द्वारा गर्भपात कराया गया।

निष्कर्ष– उपरोक्त तथ्यों के गहन अध्ययन व विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकला है कि लैंगिक असमानता ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में पितृसत्तात्मक विचारधारा, अंधविश्वास, प्रथाएं आदि ज्यादा पायी जाती है। ग्रामीण इलाके में स्त्रियों ये स्वयं मानती है कि पुरूष श्रेष्ठ स्त्रियों से श्रेष्ठ है और सारे निर्णय लेने का अधिकार पुरूषों को है। इस शोध पत्र में उत्तरदाता महिला मध्यमवर्गीय एवं निम्नवर्गीय परिवारों से है। जिसमें से 60 प्रतिशत महिलायें संयुक्त परिवार से सम्बन्धित है। इसमें से अधिकतर महिलायें ये मानती हैं कि पुत्र का होना बहुत आवश्यक है, क्योंकि इंसान की मृत्यु के बाद पुत्र ही पिण्डदान करता है। जिससे मनुष्य को मोक्षध्मुक्ति प्राप्त होती है। उर्पयुक्त शोध अध्ययन से पता चलता है कि अधिकतम महिलायें ये मानती है कि पुरूष जीवकोपार्जन करते हैं, अतः पति पत्नी के बुढ़ापे में पुत्र ही जीवकोपार्जन करके जीवन यापन करता है। अतः हर मामले में पुरूष महिलाओं से श्रेष्ठ है एवं पुरूष को श्रेष्ठ होने का श्रेय मिलना ही चाहिए। परन्तु कुछ महिलायें इसके विपरीत ये मानती है कि पुरूष स्त्री दोनों बराबर हैं, इनमें से न तो कोई श्रेष्ठ है न ही निम्न, सबको समान अधिकार मिलना चाहिए। कुछ महिलाएं ऐसी है, जो लैंगिक आधार पर भी घरेलू हिंसा की शिकार हुई हैं। समाज में लैंगिक असमानता, लैंगिक भेदभाव और पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के कारण भी कुछ हद तक जनसंख्या वृद्धि हुई है। जागरूकता की कमी एवं पुत्र के प्रति धार्मिक मानयताएं, पुत्र मोह एवं पुत्र को अधिकतर लोग का साधन मानते हैं, जिस कारण सं जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहन मिल रहा है। कुल महिलाएं पुत्र एवं पुत्री को समान मानती है, लेकिन ये सोच कुछ ही महिलाओं की है। इस शोध से ये पता चलता है कि समाज में लैंगिक समानता नही होने के कारण समाज अव्यवस्था का शिकार है। पितृसत्तात्मक सोच इस कदर व्याप्त है कि परिवार में संतान के मामले हो या रात्रि क्रिया सारे निर्णय लेने का अधिकार पुरूष के ही हाथ में है। स्त्रिया ंतो मात्र कठपुतली की भांति होती है। ये सभी कारण जनसंख्या वृद्धि का कारण होते हैं।

अतः निष्कर्षतः यह पाया गया कि लैंगिक असमानता भी जनसंख्या वृद्धि में अपनी तीव्र भूमिका निभाता है। समाज की अधिकतम शक्तियाँ एक वर्ग के हाथ में ही है। समाज में पितृसत्तात्मक विचारधारा को कम करके ही लैंगिक असमानता के कारण बढ़ती जनसंख्या को रोका जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राम आहूजा (2018), ''सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, राजस्थान।
2. हन्फी एम0ए0, हन्फी एस0ए0 (2014), ''स्त्री शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. जी0एल0 शर्मा, (2015), ''सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, राजस्थान।
4. http://www.dristias.com
5. http://www.hindustantimes.com
6. Yojana monthly magazine
7. http://www.censusindia.gov.in
8. http://wikipedia.org
9. http://byjus.com
10. www.kzagran.com
11. https://www.bbc.com

*****